Title: Need to address the problems of thousands of unorganized workers in the country who are holding demonstation at Jantar Mantar today.

श्री रामजीलाल सुमन (फ़िरोज़ाबाद) : अध्यक्ष महोद्य, आज देश के कोने-कोने से हजारों की संख्या में असंगठित मजदूर जंतर-मंतर पर एकत्रित हुए हैं और उनकी जो वेदना और समस्या है उसका इज़हार करने के लिए वे संभवतः आपसे भी मिलेंगे। हमारे देश में 92 प्रतिशत असंगठित मजदूर हैं और उनका कोई भविय नहीं है। उनको नियमित रूप से काम नहीं मिलता है चाहे खेती, हथकरघा, खुदरा व्यापार, घरेलू नौकरी या विनिर्माण का क्षेत्र हो, इन सभी क्षेत्रों में इनकी सेवाएं नियमित नहीं हैं। पिछली राजग सरकार के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 1998 में लालकिले के मैदान से यह कहा था कि हम एक करोड़ लोगों को रोजगार देंगे। इसके पश्चात श्री मोंटेक सिंह अहलूवालिया कमेटी, श्री एस.पी. गुप्ता कमेटी और द्वितीय श्रम आयोग और न जाने क्या-क्या किया गया, लेकिन देश के बेरोजगारों को काम देने की दिशा में वह कोई सार्थक पहल नहीं कर पाई। सामाजिक सुरक्षा के नाम पर उन्होंने कुछ करने की कोशिश की थी, लेकिन वे सब चीजें उन्हीं के साथ चली गईं।

अब जो यूपीए की सरकार है, इसने अपने न्यूनतम साझा कार्यक्रम में यह प्रतिबद्धता जताई थी कि ग्रामीण अंचलों के बेरोजगार लोगो को रोजगार दिया जाएगा, रोजगार की गारंटी दी जाएगी। इन लोगों ने इस सदन में ग्रामीण रोजगार गारंटी बिल भी पेश किया था उसमें यह भरोसा दिलाया गया था कि देश के हर बेरोजगार आदमी को हम काम देंगे। लेकिन हुआ यह कि 365 दिन काम देने की जो इनकी प्रतिबद्धता थी, वह सौ दिन के काम में परिवर्तित कर दी गई। हमारे देश में 593 जिलों में से सिर्फ 150 जिलों में यह कार्यक्रम शुरू किया गया। हर बेरोजगार को काम देने की जगह यह सुनिश्चित किया गया कि ग्रामीण अंचलों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवार के लोगों में से केवल एक आदमी को रोजगार देने का काम किया जाएगा। अध्यक्ष महोदय, यह देश की बहुत गंभीर समस्या है । मैं यह मानता हूं कि हमारे समाज में जो तनाव है, उसका प्रमुख कारण बेरोजगारी है। आज वही लोग अपनी वेदना कहने आए हैं। मैं आरोप लगाना चाहूंगा कि पिछली सरकार की तरह यह सरकार भी मजदूरों को काम देने की दिश में गंभीर नहीं है। गांधी, लोहिया और जय प्रकाश के देश में मैं हिंसा की वकालत नहीं कर सकता लेकिन मैं यह निश्चित रूप से कहना चाहूंगा कि आज देश के विभिन्न प्रांतों में जो तनाव है, जिसे हम नक्सलवाद कहते हैं, उसके मूल में बेरोजगारी की भावना है। आज मैं आपके माध्यम से इस सरकार से आग्रह करूंगा कि जो हजारों की संख्या में देश के कोने-कोने से लोग अपनी वेदना कहने आए हैं, अपने गुस्से का इज़हार करने आए हैं उनकी बात पर गंभीरता के साथ ध्यान दे।â€¦ (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Ramji Lal Suman, I have allowed you to raise it. It is enough.

...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोद्य : इस तरह से एसोसिएट नहीं होगा ।

...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Would you sit down or not?

...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: I have got before me notices from four other hon. Members on this question. I am going to read out their names. Their names will be recorded as having associated with this matter. They are:

Shri Hannan Mollah,

Shri Mohan Singh,

Shri Vijoy Krishna, and

Shri Ramdas Athawale.

Other hon. Members were not even bothered to give notices. Rising now does not help. It is a very important matter. I am not minimising its importance. I have allowed it to be the first matter to be raised. I am directing that the names of these four hon. Members will be noted as having associated.

श्री रामजीलाल सुमन : अध्यक्ष महोद्य, लीडर ऑफ दि हाउस यहां बैठे हुए हैंâ€¦ (व्यवधान)

MR. SPEAKER: You have made it. I have said it.

...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Mr. Ramji Lal Suman, you are a senior and responsible Member. Mr. Mohan Singh, the Speaker cannot compel any hon. Minister to reply immediately. Or, I cannot compel him at all. But here the Minister is sitting. He has heard you. It is entirely for him to respond or not to respond.

...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: It is an important matter. So I have allowed it to be raised.

Now, Shrimati Jayaprada.